“कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित समस्याएँ : विविध आयाम”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोधछात्रा

आतार तैहसीन हबीबसाब

शोधनिर्देशिका

प्रा.डॉ.संगिता शरणप्पा उप्पे

हिंदी विभागाध्यक्ष

उज्वल ग्रामीण महाविद्यालय, घोणसी

ता.उदगीर जि.लातूर

अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

मार्च, २०१६

“कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित समस्याएँ : विविध आयाम”

प्रास्ताविक :

आधुनिक काल की विकसित सभी गद्य विधाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान नाटक विधा का है। हिंदी नाटक के विकास का श्रेय भरतमुनी को दिया जा सकता है जिनसे प्रेरणा लेकर हिंदी में नाटक की रचना की जाने लगी। आचार्य भरतमुनि के अनुसार - “योऽयं स्वभावो लोकस्य सुख-दुःख समन्वित” अर्थात जिसमें स्वभाव से ही लोक के सुख-दुःख समन्वित होते है वह नाटक है।

नाटक मानव जीवन की सजीव प्रतिलिपि है। जीवन के यथार्थ का आँखों के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुभव नाटक ही करता है। इसलिए वह अन्य विधाओं की तुलना में अधिक प्रभावकारी है।

समकालीन हिंदी नाटक भारतीय परिवेश की जीवंत अभिव्यक्ति का प्रामाणिक दस्तावेज है। भारतीय जनजीवन में पर्याप्त परिवर्तन आया तो हिंदी नाटक भी उसे बदलते परिवेश की अभिव्यक्ति करने लगा। आज नाटक और रंगमंच जीवन से सीधे रूप में जुड़ा है। वह सामाजिक संवेदनाओं को प्रखरता से प्रस्तुत कर रहा है। जिसके कारण समकालीन नाटकों में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक, नारी समस्याओं के आयामों का उद्घाटन हुआ है। नाटककारों ने आर्थिक विषमता, राजनीतिक विडम्बना और भ्रष्टाचार, स्त्री-पुरुषों के नये सम्बन्धों आदि को सूक्ष्मता से परखा है। साथ ही वर्तमान विसंगत परिवेश में घूटते-टूटते और कुंण्ठित होते व्यक्ति की आन्तरिक दशाओं का चित्रण तथा ग्रामीण परिवेश की समस्याओं का चित्रण भी किया है।

कुसुम कुमार ने समकालीन हिंदी नाटककारों में अपनी एक विशिष्ट पचहान बनाई है। सामाजिक सरोकारिता उनके साहित्यिक व्यक्तित्व की उल्लेखनीय विशेषता है। कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में सामाजिक और राजनीतिक माध्यम से समकालीन

विभिन्न संदर्भों को उठाया है। आदमी के अस्तित्व पर मंडराने (गहराने) वाले संकटों (मुश्किलों) को अपने नाटकों के माध्यम से दर्शाया हैं।

कुसुम कुमार ने अपने सभी नाटकों में युगीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, स्त्री समस्याओं को चित्रित किया है। इनके नाटक व्यवस्था विरोधी है। उन्होंने अपने नाटकों में स्पष्ट किया है कि स्थितियाँ जनसाधारण के अनुरूप है, लेकिन राजनीति तथा सत्तावर्ग इसका विरोध करता है। नाटकों के चरित्र इस विडम्बना का विरोध करते है। भ्रष्ट मूल्यों के विरोध में आवाज उठाते है। इनके सभी नाटक सार्थ (यथार्थ) हैं।

'ओम क्रांति-क्रांति' नाटक के माध्यम से कुसुम कुमार ने शिक्षा क्षेत्र का बदला रूप, वर्तमान शिक्षातंत्र में व्याप्त अराजकता और भ्रष्ट शैक्षणिक माहौल की यथार्थ तस्वीर, महिला महाविद्यालय के वातावरण का सजीव चित्रण, शिक्षकों की उत्तरदायित्वहीनता और विद्यार्थियो की विवशता को स्पष्ट किया है।

'सुनो शेफाली' इनका प्रसिद्ध नाटक है। प्रस्तुत नाटक में राजनीतिक परिवेश पर करारा व्यंग्य किया है। अपने कार्य सिद्धि के लिए राजनयिक साम, दाम, दण्ड, भेद का प्रयोग करते है। अपने स्वार्थ के लिए आदर्श को तिलांजलि देते है। वोट और नोट के चक्कर में हर कार्य को सहज रूप से करते है। यह नाटक संघर्षरत स्त्री के आत्मसम्मान पूर्ण व्यवहार को प्रस्तुत करता है। इनके नाटक पढ़ने पर उनकी भाषा से, विचारों से, शब्दों के भंडार से मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ।

इसलिए उनके नाट्य साहित्य पर लेखन कार्य करने का संकल्प किया है।

विषय चयन की प्रेरणा :

नाटक में जीवन का समग्र चित्रण पूरी यथार्थता के साथ होने के कारण अन्य विधा की तुलना में नाटक विधा के प्रति मेरी अधिक रूचि रही है। स्नातक, स्नातकोत्तर कक्षा से ही कुछ प्रमुख नाटकों का अध्ययन किया है। हिंदी नाटक परिवेश की उपज है। जैसे-जैसे देश का सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिवेश बदलता गया वैसे ही हिंदी नाटकों की कथावस्तू में परिवर्तन होता गया। समकालीन नाटकों में विविध विचारधाराओं का प्रवेश हुआ।

पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण भारतीय नैतिक मूल्यों का हो रहा पतन, नारी की अविवेकपूर्ण मांग, सांप्रदायिकता का उग्र स्वरूप आदि सभी घटनाओं का चित्रण पूरी यथार्थता के साथ कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में किया है। और इन सब घटनाओं का मानवी समाज जीवन पर जो प्रभाव पड़ा है इन सभी माहौल का सूक्ष्म अध्ययन करना चाहती हूँ। इसीलिए मैंने "कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित समस्याएँ : विविध आयाम" इस शिर्षक को अपने शोधकार्य का विषय बनाना चाहा और यह विषय लेकर मैं आदरणीय गुरूवर्य डॉ.उप्पे एस.एस. मॅडम के पास पहुँचकर उनके सम्मुख पी-एच्.डी. शोधकार्य के लिए उपरोक्त विषय के पक्ष-विपक्ष में चर्चा कर एवं मेरी जिज्ञासा को देखकर इसी शोध शिर्षक से शोधकार्य को अनुमति दी। यह शोधकार्य करने की प्रेरणा मुझे मेरे गुरुवर्य प्रा.डॉ.एम.एस. कप्पीकेरे, प्रा.डॉ.बी.एस. भुक्तरे, प्रा.डॉ.पवन एमेकर, प्रा.डॉ.जानअहेमद खाजापाशा, प्रा.धनराज बिराजदार, प्रा.पी.बी. काळे, प्रा.विनोद चन्नाळे आदि से महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर जि.लातूर में अध्यापक रूप में अध्ययन कार्य करते समय मिली।

अनुसंधान का उद्देश :

१) कुसुम कुमार के जीवन एवं साहित्य से परिचित कराना।

२) कुसुम कुमार के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

३) कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करना।

४) कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित दलित स्त्रीयों की समस्याओं का अध्ययन करना।

५) कुसुम कुमार के नाट्य साहित्य का शिल्पगत अध्ययन करना।

शोध विषय का महत्त्व :

समकालीन नाटकों में समाज जीवन के विडंबनापूर्ण स्थिति का चित्रण किया गया है। महानगरीय जीवन के बदलाव, ग्रामीण जीवन में आए बदलाव की स्थिति, बढ़ती महंगाई, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, पारिवारिक तनाव, टूटन, अलगाव, स्त्री की अस्तित्व चेतना के उभरे हुए स्वर, गांव तथा शहरों में बढ़ती भोगवादी प्रवृत्ति, नैतिक मूल्यों का हो रहा पतन, दो पीढ़ियों के बीच हो रहे टकराव इन सब मानवी जीवन की

समस्याओं को पूरी यथार्थता के साथ उद्घाटित करना इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश है और इसी उद्देश प्राप्ति के लिए इस शोध कार्य को निम्न अध्यायों में विभक्त किया गया है।

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

रचनाकार कुसुम कुमार

द्वितीय अध्याय

कुसुम कुमार के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन

तृतीय अध्याय

कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित समस्याएँ : विविध आयाम

चतुर्थ अध्याय

कुसुम कुमार के नाटकों में दलित स्त्रीओं की समस्याएँ

पंचम अध्याय

कुसुम कुमार के नाट्य साहित्य : शिल्पगत अध्ययन

षष्ठम अध्याय

उपसंहार

प्रथम अध्याय - रचनाकार कुसुम कुमार

प्रस्तुत अध्याय में नाटककार का जीवन परिचय एवं साहित्य परिचय दिया गया है। जिसमें जन्म, शिक्षा, पुरस्कार, सम्मान, सेवा आदि को लेकर चर्चा की गयी है। साहित्य में नाटक, उपन्यास, कविता, एकांकी, नुक्कड़ नाटक, अनुवाद, चित्रकार आदि विधाओं का संक्षिप्त विवेचन दिया जायेगा।

द्वितीय अध्याय - कुसुम कुमार के नाटकों का समीक्षात्मक अध्ययन

इस अध्याय के अंतर्गत कुसुम कुमार के नाटकों की कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, शैली आदि नाटक के तत्त्वों के आधार पर अध्ययन किया जाएगा।

तृतीय अध्याय - कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित समस्याएँ : विविध आयाम

इस अध्याय में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक समस्याओं का अध्ययन किया है।

३.१ सामाजिक समस्याएँ :

इसके अंतर्गत समाज में व्याप्त अंधविश्वास और जर्जर रुढ़ियों का चित्रण, पारिवारिक रिश्तों से उभरता सामाजिक बोध, पारिवारिक संघर्ष, टूटन, मूल्य विघटन, नारी मानसिकता में हुए परिवर्तन, महानगरीय जीवन के तनाव, अकेलेपन, भोगवादी प्रवृत्ती, बढ़ती बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, शोषण के विभिन्न स्तर, सांप्रदायिकता, जातीय भेदभाव, जीवन में हो रहे परिवर्तन आदि का यथार्थ चित्रण इस अध्याय के अंतर्गत किया जायेगा।

३.२ राजनीतिक समस्याएँ :

इसमें सरकार की आर्थिक उदारीकरण की नीति, ग्रामीणों के नाम पर हो रहा शोषण, विस्थापन की पीड़ा, नेता और अफसरों के साँठ-गाँठ से बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार, मोहभंग, शासन-जनता का संघर्ष, राजनीतित्व, दल-बदल, चुनाव प्रक्रिया में जाति, धर्म, प्रांतवाद, अपना-पराया का खुलकर प्रयोग करने से निर्माण हो रहे संकट का चित्रण किया जायेगा।

३.३ आर्थिक समस्याएँ :

इसमें समाज की स्वार्थी वृत्ति, बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, आर्थिक अभाव, आर्थिक विषमता, मनुष्य की लालची प्रवृत्ती के कारण हो रहा भ्रष्टाचार, स्त्री-पुरुष में बढ़ती आर्थिक स्वावलंबन की प्रवृत्ती, अर्थ के कारण बनते-बिगड़ते रिश्ते आदि।

३.४ धार्मिक समस्याएँ :

इसमें धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर हो रहा जातीय, धार्मिक भेदभाव, धर्म के प्रति आस्था एवं अनास्था, पश्चात संस्कृति के प्रभाव से हो रहा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का ऱ्हास, पर्व, त्यौहार, उत्सव के प्रति भारतीय लोगों में बढ़ती उदासीनता की भावना, धार्मिक मूल्यों में हो रही टूटन, साधू संतों की ढोंगी प्रवृत्ती,

अंधविश्वास, ईश्वर के प्रति श्रद्धा, युवा पिढ़ी का अपनी मिट्टी ओर संस्कारों से अलगाव, धर्म के नाम पर हो रहा संघर्ष, शोषण आदि।

चतुर्थ अध्याय - कुसुम कुमार के नाटकों में दलित स्त्रीओं की समस्याएँ

इसके अंतर्गत दलित विमर्श की पृष्ठभूमि, दलित विमर्श का स्वरूप, अवधारणा, दलित स्त्रीयों की समस्याओं का चित्रण ।

पंचम अध्याय - कुसुम कुमार के नाट्य साहित्य : शिल्पगत अध्ययन

इस अध्याय में भाषा और शिल्प के अध्ययन के साथ-साथ लेखनशैली, कथागत बिखराव, पात्रों का चरित्रगत अध्ययन आदि का अध्ययन।

षष्ठम अध्याय - उपसंहार

इस अध्याय के अंतर्गत सभी अध्यायों का निष्कर्ष प्रस्तुत करेंगे।

अनुसंधान की पद्धतियाँ :

ज्ञान का क्षेत्र इतना विस्तृत है की, जिसकी प्राप्ति के लिए एवम् अध्ययन के लिए विभिन्न शोध पद्धतियों की आवश्यकता पड़ती है। शिर्षक का क्षेत्र अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत होने के कारण विभिन्न शोध पद्धतियों का प्रयोग किया जायेगा। आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, व्याख्यात्मक, सर्वेक्षणात्मक आदि। विषय की तह तक जाने के लिए सहायक ग्रंथों का सहारा लिया जायेगा।

	मूल रचनाएँ	**प्रकाशन**
१)	ओम क्रांति-क्रांति	१९७८
२)	दिल्ली ऊँचा सुनती है	१९८०
३)	प्रश्नकाल	१९८०
४)	संस्कार को नमस्कार	१९८१
५)	रावण लीला	१९८१
६)	पवन चतुर्वेदी की डायरी	१९८६
७)	माधवसिंह इज डेड	१९८४
८)	सात छोटे नाटक	१९९३
९)	लष्कर चौक	१९९७
१०)	सुनो शेफाली	२०१३

संदर्भ ग्रंथ

सहाय्यक ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएँ

विविध कोश

इंटरनेट

शोध-छात्रा

आतार तैहसीन हबीबसाब

शोध-निर्देशक

प्रा.डॉ.संगिता शरणप्पा उप्पे